शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

# भारतीय समकालीन अमूर्त चित्रकला में संतोष वर्मा जी के कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 09.03.2023
स्वीकृतः 16.03.2023

12

**ओम प्रकाश मिश्रा**
शोधार्थी
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

**डॉ० आशीष गर्ग**
विभागाध्यक्ष ललित कला विभाग
मोनार्ड विश्वविद्यालय

***सारांश***

*भारतीय समकालीन कला में अमूर्तता एक क्रांति की तरह है। वैज्ञानिक आविष्कारों के परिणामस्वरूप ही अमूर्तता का उदय हुआ। अमूर्त कला में भी बौद्धिकता का प्रभाव अधिक रहता है। जिस कारण अमूर्तता में बौद्धिक शक्ति, व्यक्तिगत खोज एवं माध्यम तथा कलात्मक ज्ञान का गुलदस्ता बन जाता है। यही सृजनात्मकता एवं बौद्धिक मूल्य से समकालीन कला कैसे अधूरी रहती। नित्य नवीन प्रयोग तथा वैज्ञानिक तकनीकों ने अमूर्तता को विकसित किया एवं नवीन कलाकरों की सृजनात्मकता को स्वतंत्रता प्रदान की। जिससे भिन्न–भिन्न शैलियाँ व नए–२ माध्यम एवं तकनीक जुड़ते गये। पारम्परिक एवं लघुचित्रण शैली से अमूर्तता की यह यात्रा नवीन कालकरों को प्रोत्साहित व मार्गदर्शित करती है। जिस कारण अनेक भारतीय समकालीन कलाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। सफल समकालीन भारतीय कलाकरों में श्री संतोष वर्मा जी नाम अति विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण है। जिन्होंने अमूर्तन विधा के माध्यम से समकालीन भारतीय कला के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित कर निरन्तर कला कार्य में संलग्न हैं।*

***मुख्य बिन्दु***

*अमूर्तता, प्रकृति, प्रकाश, लोककला, वाराणसी, आध्यत्मिक।*

**परिचय**

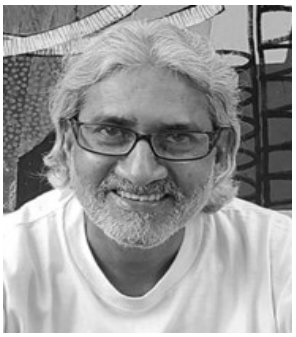

ललित कला की परंपरा उतनी ही प्राचीन एवं जीवंत है जितना मानव का इतिहास। यह उक्त प्रांत देश की सांस्कृतिक पहचान होती है। मानव सभ्यता में भारतीय संस्कृति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। यह वही सभ्यता है जिसने संपूर्ण संसार को अनेकानेक दिव्य–ज्ञान से परिचित करवाया। अजंता के भित्ति–चित्र, दक्षिण के स्थापत्य, खजुराहो, एलिफेंटा इत्यादि कला मंदिरों में इसके दर्शन सुलभ हो जाते हैं। साथ ही साथ

मुगल कला, राजपूत कला, कांगड़ा इत्यादि की वैभवकालीन स्मृति भूल पाना असंभव है। जो हमारी गौरवशाली अतीत का स्मरण करवाती है।

जैसा की सर्वविदित है कि ब्रिटिश अधिपत्य के जमाने में ही आधुनिकतावाद की अवधारणा भारत में सर्व सुलभ हो गई थी। यह आधुनिकता पाश्चात्य के गर्भ से ही प्रकट हुई। यह पूर्ण रूप से सत्य है। जिसमे भारतीय कलाकारों के तार्किक एवं यथार्थ दृष्टिकोण को विस्तृत धरातल प्रदान किया। जो समय के साथ–साथ पल्लवित एवं विकसित हुई। आधुनिक भारत के चित्रकला के क्रमिक विकास को समझने के लिए 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध की विकसित कला को समझना होगा।

आधुनिक भारतीय चित्रकला के क्रमिक विकास क्रम को समझने के लिए 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध कला क्षेत्र में दृष्टिपात करना अत्यंत आवश्यक है। वस्तुतः इस कालखंड में पाश्चात्य शासकों का प्रभुत्व काफी बढ़ गया था। जिसमें प्रयोगधार्मिकता एवं अकादमिक शिक्षण का विशेष रूप से सूत्रपात हुआ। प्रत्येक क्षेत्र में अंग्रेजी शासकों का प्रभुत्व बढ़ता गया।

यदि चित्र कला के क्षेत्र में देखा जाए तो भारतीय लघु चित्र परंपरा का अपना एक समृद्ध इतिहास रहा है। जिसका वर्णन हमारे अनेक ऐतिहासिक ग्रंथों में मिलता है। पाश्चात्य शैली व भारतीय पारंपरिक शैली की वर्णसंकरता से उत्पन्न होने वाली कंपनी शैली सम्भवतः कला के व्यक्तिवादी विचारधारा का प्रथम बिंदु प्रमाणित हुई। इसी समय में कला के क्षेत्र में स्कूल, कॉलेज तक काला संस्थाओं में लंदन की रॉयल अकादमी के आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इसी क्रम में 1870 ई० में कैमरे के अविष्कार नेपारंपरिक कला परंपरा को ठेस पहुंचाई। किंतु भारतीय कला के शुभचिंतकों ने एक नवीन कला आंदोलन का सूत्रपात किया। जिसके माध्यम से कला का लोप होने से बचाया जा सके। यह कला आंदोलन भारतीय कला जगत का पुनर्जागरण काल अथवा बंगाल शैली आंदोलन के नाम से जाना गया। जो पूर्ण रूप से चित्र भारतीय विषयों पर बने। जिसकी शैली में जापान व वह भारत की मिश्रित शैली थी। 1884 ई० में कोलकाता स्कूल की स्थापना इस क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुई। जिसके प्रधानाचार्य कलाविद् ई०वि० हैवेल रहे। यहीं से कला आंदोलन का उत्थान एवं संवर्धन हुआ, जो निरंतर विकास के मार्ग पर अग्रसर है।

बंगाल से निकलकर अनेक चित्रकार देश के विभिन्न स्थापित कला महाविद्यालयों में आचार्य पद पर कार्यरत रहे। जो समय–समय पर पाश्चात्य देशों का भ्रमण कर वहां चल रही कलात्मक गतिविधियों को भी भारत में निमंत्रितकिया। काल गति कहें या परिवर्तन कि अब दिल्ली व मुंबई कला के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में उभर कर सामने आने लगी। जिसमें जे०जे० स्कूल ऑफ आर्टस, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप 1948 शिल्पी चक्र, 1580 जैसी अनेक संस्थाएं एवं समूह का निर्माण किया। जिसने प्रयोगवादी प्रकृति को बढ़ावा दिया। अब कला व्यक्तिवादी हो चुकी थी। बंगाल शैली का प्रभाव शिथिल पड़ चुका था। फल स्वरूप ई०वी० हैवेल, अवनींद्र नाथ टैगोर, रविंद्रनाथ इत्यादि के प्रयास से आधुनिक कला का प्रतिपादन एवं संवर्धन हुआ।

आधुनिक कला भी जीवन की नवीनताओं, समसामयिक सृजनात्मकता, संभावनाओं, गहन संवेदनाओं तथा वैचारिक जीवन को समझने का प्रयास करती हैं। जहां एक तरफ प्राचीन चित्रकला में सिद्धांत परंपरा एवं विषय की प्रधानता रहती थी, किंतु आधुनिक चित्रकला में स्वतंत्रता एवं नवीनता की लालसा के साथ–साथ चित्रकार की अभिव्यक्ति को प्रमुखता दी है। आधुनिक चित्रकला का जन्म वैज्ञानिक अवधारणा का परिणाम है। यह एक प्रयोगवादी प्रवृत्ति की विचारधारा है। यही इसकी प्रगतिशीलता का आधार है।

भारत की कला में अनेक कलाविज्ञों ने चित्र फलक की पूर्णता एवं अमूर्तता को एक धरातल पर लाकर उसको कलाकार के दृष्टिकोण को विकसित कर ली है। कलाकारों ने अपनी मुक्ति के लिए तथा अपनी चित्र भाषा विकसित की। आकृति मूलक कलाएं जो कथ्य को सहजता से कह पाती हैं, किंतु आकृतिविहीन कलाकृति के लिये यह कठिन होता है। मूर्खता में बौद्धिकता का प्रभाव अन्य की तुलना में अधिक रहता है। इस कारण अमूर्तता का महत्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि विचार एवं तर्कविहीन अमूर्तता अनावश्यक भ्रम के अलावा कुछ भी नहीं है। अमूर्तन का बौद्धिक शक्ति व्यक्तिगत खोज तथा माध्यम एवं कलात्मक जानकारियों से इकट्ठा किया जा सकता है। अमूर्तता में अनेक संभावनाएं सदैव विद्धयमान रहती हैं। जिसमें चेतना का अलौकिकता एवं नवीनता सदैव बनी रहे। जिसमें किसी भी अस्तित्व का खतरा ना हो। वह कलात्मक प्रदर्शन मात्र हो। इन सभी विशेषताओं से ओतप्रोत समकालीन आधुनिक कलाकार संतोष वर्मा के कलाकृतियों एवं उनकी जीवंत कला यात्रा का विश्लेषणात्मक अध्ययन निम्नवत है।

समकालीन आधुनिक भारतीय चित्रकला में श्री संतोष वर्मा जी का विशेष स्थान है। जो अपने पास जाते हैं रंगों के साथ मूर्त–अमूर्त गहरे तल पर विभिन्न तकनीकी आवरणों से जीवन की एक नई परिभाषा गढ़ देते हैं। जो जीवन के अनेक पहलुओं को रंगों के माध्यम से प्रकाश में खोलता है। और हमें यह बताता है कि क्या हम उसकी उक्त बात को समझ पा रहे हैं अथवा नहीं। आपके चित्र कल्पना एवं परिकल्पना का संयुक्त प्रस्तुतीकरण हैं।

संतोष वर्मा जी का जन्म सन् 1956 ई० में बनारस के निकट मांटी नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री रामचरित्र वर्मा एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। जिनको संतोष जी के अल्हड़पन से सख्त एतराज था। संयुक्त परिवार में आपका स्थान एक नटखट बालक के रूप में स्थापित हो चुका था। प्रारंभ से ही आपका मन पारंपरिक शिक्षा में नहीं लगा। प्रकृति तत्वो एवं ग्रामीणांचल के आसपास ही आप सदैव निवास करते थे। इसी में आपको आनंद एवं शांति की प्राप्ति होती थी। केवल चित्रकला विषय ही एकमात्र ऐसा विषय था जिसमें आपकी विशेष रूचि थी। इसी कारण आप कला के अध्यापको के विशेष प्रिय छात्र थे। गांव की प्रारंभिक पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात पिताजी के साथ संतोष वर्मा बनारस चले आए एवं इंटरमीडिएट में प्रवेश लिया। किंतु अब भी आपको कला एवं कलाकृति सम्मोहित किए हुई थी। जिसके कारण आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक एवं

परास्नातक की उपाधि प्राप्त की और कला के विस्तार में स्वयं को न्योछावर कर दिया। प्रोफेसर ए०पी० गज्जर संतोष के कृतियों पर फिदा थे। कॉलेज के अतिरिक्त अन्य कार्य जो आर्थिक मदद कर सकें उन्हें गज्जर सर के द्वारा प्राप्त होत रहते थे। इसी कॉलेज में विद्यार्थी जीवन के दौरान आपको अपनी जीवनसंगिनी श्यामोश्री मिलीं जो आपके साथ ही पढ़ती थी। श्यामोंश्री की प्रेरणा से ही आपने बनारस से बाहर जाने का फैसला किया। यह समय 1883 ई० का था जब आप दिल्ली आए। उस समय रोजगार एवं जीविकोपार्जन सबसे बड़ी समस्या थी। अतः कुछ लेआउट आर्टिस्ट की नौकरी कर उक्त समस्या का समाधान किया। इस संघर्ष के दौर में चित्रकार स्वर्गीय करुणानिधान ने उन्हें रहने का आसरा दिया। कुछ समय तक आप अनिल करजई के घर भी रहे। चूकि इन सभी लोगों का संबंध बनारस से था इस करण लगाव होना जायज था। संतोष जी ने पेट्रियट की लिंक पत्रिका में भी काम किया। यहीं पर आपकी मुलाकात सईद नकवी, जफर आगा, और जॉन दयाल जैसे पत्रकारों से हुई। पत्रकारों एवं विचारकों से आपका स्नेह पूर्वव्रत ही प्रगाण था। अनेक अब कमर्शियल काम करने से अब आपका मन उबने लगा था। किंतु बाजार के महत्व को नकारना किसी भी कलाकार के लिए संभव नहीं होता है। वह बताते हैं कि महादेवी वर्मा की जिस किताब के लिये उन्हे ज्ञानपीठ सम्मान पुरस्कार मिला उसका कवर पेज मैने ही बनाया था। जिसे बताते हुए आपकी आंखों में एक चमक आ जाती है। राजेंद्र यादव की कांटो की बात का कवर पेज भी संतोष जी ने ही तैयार किया था। आपका मानना है कि साहित्य एवं चित्रकारी एक जैसी कला की मांग करते हैं। बस माध्यमों का अंतर है। वह कहते हैं कि कला की दुनिया में बाजार की भूमिका अत्यंत प्रमुख है। आज अगर पेंटिंग खरीदना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतरीन पूंजी का निवेश है। इस प्रक्रिया ने कलाकारों एवं कलाकृतियों की साख बढ़ा दी है। किंतु यदि बाजार कल्पनाशीलता को प्रभावित करने लगे तो यह भी ठीक नहीं है। आपकी राय में आदर्श स्थिति यह है कि, आप जो भी कलाकृति बनाए उसे बाजार मिले। यदि बाजार आपको यह बताने लगे कि बनाना क्या है तो यह काफी असंतोषजनक है। यही बाजार बिस्मिल्ला खां और पंडित रविशंकर तक पहुंचा जिसको समझस्वयं को उस हिसाब सेतैयार किया।

अब संतोष जी ने कार्य में स्वच्छन्दता को आत्मसात कर अपनी पूरी ऊर्जा अपनी कलाकृतियों एवं संरचनाओं में आरोपित कर देते हैं। यह प्रक्रिया एक लंबे समय तक चलती रही। अनंतः आपकी मेहनत रंग लाई उनके काम को दुनिया के सामने पहचान मिली। सन् 1992 ई० में जीवन का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार भारत भवन द्वारा दिया गया विनाले अवार्ड था। इस घटना के पश्चात्य उन्होंने अपना सर्वस्व कला को समर्पित कर दिया। अब गृहस्थी का संपूर्ण भार आपकी धर्मपत्नी श्यामोश्री के ऊपर था। जिसमें आपको सदैव पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा। इसके पश्चात शायद ही कोई ऐसा साल होगा जब आप को राष्ट्रीय स्तर का कोई अवार्ड ना मिला हो। पुरस्कारों की मानो बरसात ही हो गई थी। 1993 ई० में अमृतसर अकादमी अवार्ड, 1994 ई० में साहित्य कला परिषद अवार्ड, 1995 ई० में उत्तर प्रदेश कला

अकादमी स्टेट अवार्ड और बाद में ऑल इंडिया अवार्ड, 1996 ई० में अंताला ग्रुप एग्जीबिशन अवार्ड, 1999 ई० में पुनः अमृतसर फाइन आर्ट अकादमी सम्मान, 2000 ई० में आईफेक्स के दो अवार्ड और 2001 ई० में ललित कला अकादमी के नेशनल अवार्ड एवं कैमलिन के पहले नॉर्दर्न रीजन अवार्ड सहित चार अवार्ड से नवाजा गया। इसमें से दो अवार्ड उन्हें दोबारा मिले। उत्कृष्ट कार्य करने के लिए ललित कला अकादमी ने आप को दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा। 2002 ई० में सांस्कृतिक मंत्रालय की फेलोशिप भी प्राप्त हुई। वर्तमान में अनेकों एकल तथा ग्रुप शो में आप अपने चित्रों का प्रदर्शन कर चुके हैं। मुंबई की प्रसिद्ध जहांगीर आर्ट गैलरी में वह 1996 से 2008 तक तीन प्रदर्शनियो में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। इसके साथ–साथ ताज आर्ट गैलरी में भी आपके कार्यों का प्रदर्शन हो चुका है। विश्व पटल पर कोरिया, सीरिया, श्रीलंका इत्यादि में तीन ग्रुप शो हो चुके हैं।

आपके उत्कृष्ट रचनात्मक कार्यों का संग्रह नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट में संग्रहित है। इसके साथ ही साथ ललित कला अकादमी नई दिल्ली, साहित्य कला परिषद नई दिल्ली, भारत भवन भोपाल, उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी लखनऊ, संपत गुजरात और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, भारत पेट्रोलियम भवन नोएडा इत्यादि महत्वपूर्ण स्थानों एवं संस्थानों में आप की कृतियों का संग्रह है।

संतोष जी अपने कार्यों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अमूर्तता को ही अपनी कला का मूल्य या माध्यम बना लिया। यदि कला समीक्षकों की मानी जाए तो आपका कार्य बालपन की स्मृतियों से प्रभावित है। संतोष जी उक्त कथन से पूर्ण रूप से स्वयं को सहमत पाते हैं। आप कहते हैं कि चित्रों का विषय, अपने बचपन से तथा रंग योजना प्रकृति से ग्रहण करता हूँ। मेरा कार्य पूर्ण रूप से प्रकाश का प्रतिबिंब है। प्रायः बचपन में मैं बगीचे में ही बैठा रहता था जो प्रातः से सांय कालीन वेला तक अबाध गति से यह क्रम चलता रहाता था। पेड़ों से छनकर आने वाली प्रकाश की किरणें सदैव मुझे आकर्शित एवं आनंदित करती रही। यह प्रकाश की किरणें प्रायः अनेक मूर्त–अमूर्त आकृतियों का सृजन करती रहती थी। जो प्रतिपल मेरे आकर्षण का केंद्रवनी रहती थी। प्रकाश की यही आभा एवं उनकी नाटकियता ऋतु एवं काल के अनुसार नए–नए प्रतिबिंब पैदा करती थी। यह सब मेरे कार्यों में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इसके साथ ही साथ मेरे कार्यों में बचपन के खिलौने भी नजर आते हैं, क्योंकि यह मैं सोच समझकर नहीं करता। यह स्वतः ही हो जाता है। कुछ कार्यों पर शहरों का भी प्रभाव दिखता है। जो समय के बदलते परिवेश का परिणाम है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि मैं अपना मूल ग्राम में जीवन को विस्मृत कर लूँ।

संतोष जी मूलतः स्वयं को भोजपुरी मिट्टी का अंश मानते हैं, अर्थात उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग जहां भोजपुर की मिठास व्याप्त है। पूर्वांचल का खाना, परिधान व लोकाचार एक जैसा ही है। उक्त मिट्टी की सुगंध उनके कार्यों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

आपके चित्रों में आम आदमी की सोच को आधुनिकता के सशक्त पैमाने से प्रस्तुत किया गया है। इसमें भौगोलिक आकार एवं प्राकृतिक छटा के साथ–साथ आध्यात्मिकता का भी सम्फुटन है। जिसमें मनुष्य एवं उसकी प्रकृति के सर्जनात्मकता को दर्शाया गया है।

संतोष जी अपने चित्रण में बाहरी प्रकृति से जुड़ी वस्तु नहीं बल्कि आंतरिक हिस्से को देखते हैं और यह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वे प्रकृति को नहीं छोड़ सकते। प्रकृति को समझने हेतु अनेक सार्थक प्रयास करते हैं। जो आपके चित्रों में फूल, पेड़, घास, पत्थरों का टेक्चर, सीप, पानी की ध्वनी, जीव जंतु, बादल, अलग–अलग प्रकार के प्रकाश के प्रतिबिम्ब का आप के चित्रों में विशेष संयोग दृष्टिगोचर होता है।

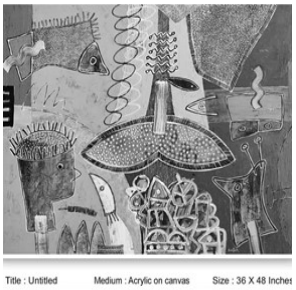
Title : Untitled Medium : Acrylic on canvas Size : 36 X 48 Inches

आपकी कला कलाकार को जड़ स्वच्छंदता से मुक्त करती है। आपके चित्र में प्राकृतिक तत्वों का लयात्मक विवरण है। जैसे पत्तों पर गिरती हुई रोशनी की किरण पड़ती है। पक्षियों का उड़ना एवं उनके पंखों का कहीं पर गिरना इत्यादि जो साहित्य में ना होकर आपके चित्र में दृष्टिगत होता है। इन सभी को बड़ी बारीकी से आपने अपने चित्रों में प्रस्तुत एवं सृजित किया है। जिससे आनंद की प्राप्ति होती है और यह जागरूकता भी प्रदान करती है। जब कलाकार चित्रण करता है तो दर्शक उसे अनुभव करता है। चित्रण एवं अवलोकन का अनुभव एक धरातल पर होता है। जिससे कला को करने वाला व देखने वाला सभी समान रसोपान का आनंद लेते हैं। कुछ प्रमुख चित्र इस प्रकार हैं।

आपके चित्रण में रंगों का विशेष महत्व है। आपकी "इल्यूजन" नामक चित्र प्रदर्शनी में इसे देखा जा सकता है। जिसमें रंगों का संयोजन उत्तम प्रकार से किया गया है। जिसमें करोड़ों रंगों का विभाजन किया गया है। चित्रों में आकाश ठोस ना होकर अमूर्तता का प्रभाव लिए अपना सौंदर्य बिखेरते हैं। यह आकृतियां नकाब जैसी प्रतीत होती हैं। कुछ आकृतियों में खनिज रंगों का प्रभाव मिलता है। आप अपनी कलाकृतियों में 1 रंगों के तानों को दर्शाने के लिए घना एवं हल्के रंगों को एक के पास एक दिखाया गया है। इन्होंने अपने अमूर्त भावों को पौराणिक रूप देकर भी दर्शाने का प्रयास किया।

आपने अपने चित्रों में काले और सफेद रंगों का विशेष रूप से प्रयोग किया है। जो चित्रों में नवीनता प्रदान कर उन्हें रूढ़िवादी परंपरा से मुक्त करता है। आपका कहना है कि प्रारंभ में मैं रूढ़ियों में फंसा हुआ हूँ। जैसे तान रंग जो एक चित्र के साथ सभी में दर्शाए गए हैं। इसकी तुलना में गैर पारंपरिक चित्रण ब्लैक एंड वाइट में प्रयोग किए। यह प्रयोग सफल रहा। कला विधिकाओं एवं प्रशंसकों का असीम प्यार मिला। इस सीरीज को कई बार पुरस्कृत भी किया गया। जैसे नेशनल अवार्ड 2001, आइफैक्स अवॉर्ड, लखनऊ अवार्ड इत्यादि।

ताज होटल में ताज गैलरी में प्रदर्शित चित्रों में आप के चित्र संगीत का आगमन एवं संफुटन लिए हुए प्रदर्शित होते रहे हैं। क्योंकि आप का मानना है कि कला एवं संगीत एक दूसरे के पूरक एवं विपरीत विद्या है। जैसे कोई विचार खुले आसमान में निरंतर उड़ रहा हो। यह प्रक्रिया बेहद कलात्मक लगती है। आकृतियां स्थान की आत्मा हैं और स्थान आत्मा की प्राणवायु है।

एक अन्य सिरीज "कैलिडोस्कोप" को धूमिमल आर्ट गैलरी में प्रदर्शित किया गया। यह सभी कलाकृतियों में बनारस का प्रतिबिंब दिखता है। जो निरंकार होते हुए भी साकार का अनुभव एवं आभास देती है।

Title : Untitled Medium : Acrylic on canvas Size : 36 X 48 Inche

संतोष जी के प्रारंभिक कलाकृतियों को देखें तो उनमें रंगों का एक अलग अलग साम्राज्य दिखता है। आपके ऊपर चित्र में तकनीकी एक अच्छी खासी भूमिका भी थी। जिसके लिए आप एयर ब्रश का प्रयोग करते थे। जिससे एक कोमल रंग योजना तैयार करने में विशेष सहायता मिलती थी। इस प्रकार कहे तो संतोष वर्मा जी के प्रारंभिक चित्रण में तकनीक एवं रंगों का एक खास मिश्रण रहा। जो कला के प्रेमियों को सदैव आकर्शित करता रहा है। इनमें से कुछ कृतियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जिनका वर्णन किया जाना आवश्यक है। आपके द्वारा बनाए गए कृति "विद लाइट" विशेष महत्व की है। इसे राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह रंगों के साथ–साथ मूर्त और अमूर्त के तल पर अपनी विशिष्ट शैली के लिए जीवन को एक नवीन परिभाषा देती है। तभी विचारों का कटा–अनकटा हर पहलू रंगों के कैनवास पर खुलता है और अपनी मूक भाषा से कलाकार एवं दर्शकों को आकर्शित करता है। यह कृति 48''X46'' में ऐक्रेलिक रंगों से एयर ब्रश की सहायता से पूर्ण की गई है। इस प्रकार लगभग–लगभग आपकी समस्त कलाकृतियाँ अमूर्तता एवं प्रकृतिवाद को धारण किए हुए हैं जो विभिन्न माप एवं परिसीमन में एयरब्रश के माध्यम से निर्मित की गई हैं। सामान्यतः आपकी कलाकृतियां शीर्षकविहिन भी रही हैं।

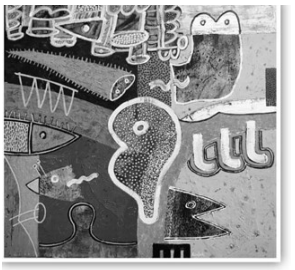
Title : Untitled Medium: Acrylic on canvas Size : 36 X 40 Inches

वर्तमान में आपकी शैली पूर्वव्रत शैली से पूर्णतःविरक्त है। इसका कारण बताते हुए संतोष जी कहते हैं कि, मुझ पर पूर्वांचलीय मिट्टी का विशेष प्रभाव रहा है। उत्तर प्रदेश के जिस क्षेत्र से आप आते हैं वहां भोजपुरी का प्रभाव है। यह भाषा वहाँ की आत्मा में बसी है। बनारस वाराणसी पूर्वांचल का केंद्र बिंदु है। पूर्वांचल के कलाकारों का एवं कला विशेष की एक समृद्ध परंपरा रही है। जिसने विश्व पटल पर अपनी कला का लोहा मनवाया है। इनमें बिरजू महाराज, अच्छन्द महाराज, राजन–साजन मिश्र, छन्नूलाल मिश्र इत्यादि का उल्लेख मिलता है। यहां की लोक कलाओं का बड़ा महत्व है। मेरा लोक कलाओं के क्षेत्र में कार्य करने की हार्दिक कामना थी। वाराणसी की दीवारों पर तोता, मैना, मछली,श्री हनुमान जी इत्यादि भित्ति चित्रों पर मैं कार्य करना चाहता था। गांव में होने वाली प्राकृतिक पूजा के दौरान प्रतीकात्मक चित्रण, कोहबर, अनुष्ठानिक कला इत्यादि भी आपको बेहद आकर्शित करते हैं। इसके साथ–साथ टेक्चर का अवचेतन मन में सृजित मूर्त–अमूर्त आकृतियों का मिश्रण कर एक नवीन कला शैली को जन्म दिया। इस कला शैली में बाल्यकाल का अल्हड़पन, ग्राम लोक जीवन की सादगी एवं अनेक लोक कला के प्रतीक आपस में मिलकर एक नवीन कला संसार का सृजन करते हैं। जो वास्तव में अद्भुत है।

यह शैली समकालीन कला में लोक कला के प्रभाव को दर्शाती है एवं प्रमाणित करती है। वर्तमान में आप इसी शैली में सृजन करते जा रहे हैं एवं सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

अतः कह सकते हैं कि संतोष वर्मा जी की प्रारंभिक एवं समकालीन शैली अपने आप में श्रेष्ठ है जो अकादमिक एवं रचनात्मकता का संफुट धारण किए हुए हैं। यह संपूर्ण कार्य अमूर्त शैली में चित्रित है। जिसके पीछे अनेक दार्शनिक एवं लोकमत जुड़े हुए हैं। जिसमें बनारस शहर की परछाई सदैव लगती रहती है। प्रारंभ में आपकी कला तकनीक प्रधान थी किंतु वर्तमान में यह भाव एवं लोक कला प्रधान हो रही है। चित्राकृति को आप भाषा के बंधनों से मुक्त करते हैं। आपका कहना है कि यदि चित्र को समझने हेतु भाषा की आवश्यकता पड़ती है तो चित्र निम्न स्तर का है। यह भाव का सीधा प्रदर्शन है जो कथा, कहानियों से विपरीत है। कला एवं कलाकार के बारे में आप कहते हैं कि मैं व्यक्तिगत रुप से हुसैन जी से काफी प्रभावित रहा। मेरा मानना है कि आप जैसे हैं आपकी कला भी वैसी ही होनी चाहिए। हुसैन कसौटी पर खरा उतरते हैं।

सन् 1982 में बनारस की पावन धरती से चलकर दिल्ली आए तब से आप की कला निरंतरता के साथ प्रवाहमान है। विभिन्न प्रयोगों, कला प्रदर्शनियों, पुरस्कारों के पश्चात भी है सृजन निरंतर चल रहा है। संतोष जी का कहना है कि किसी भी कलाकार संपूर्ण व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना कठिन है। कलाकार प्रकृति का ही प्रतिबिंब है, इस में किंचित मात्र भी संदेह नहीं है। जिस प्रकार प्रकृति शब्द रहित, सांकेतिक भाषा का प्रयोग कर अपने उपदेश्यो से अवगत कराती है ठीक उसी प्रकार कलाकार अपने प्रतिकों एवं रंगों के माध्यम से अपने भाव प्रकट करता है जो मूल रुप से अमूर्त ही होता है। समकालीन कला और कलाकार एक दूसरे के पूरक हैं। यह तथ्य संतोष जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से प्रमाणित होता है।

## संदर्भ

1. गोस्वामी, प्रेम चंद्र. (2007). आधुनिक भारतीय चित्र कला के आधार स्तम्भ. राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमीः जयपुर।
2. जोशी, ज्योतिश. (2010). आधुनिक भारतीय कला. यश पब्लिकेशः दिल्ली. प्रथम संस्करण.
3. शर्मा, राजेंद्र पी०. (2022). टुडे दैनिक नव ज्योति इ–एडिशन. ३१ मई।
4. व्यकितगत साक्षात्कार पर आधारित।